छोटी पायनियर

एक बच्ची की कहानी...

एडम हैंचर

छोटी पायनियर

एक बच्ची की कहानी...

1849 की पतझड़ में, पापा का देहांत हो गया.
उन्होंने हमारे लिए एक नया घर छोड़ा था, लेकिन वह बहुत दूर था.
"एक नया जीवन!" माँ ने तब कहा
जब हम अपना सामान जर्जर लकड़ी के वैगन में लाद रहे थे.
बसंत आ गया था, और हम कैलिफ़ोर्निया जा रहे थे.
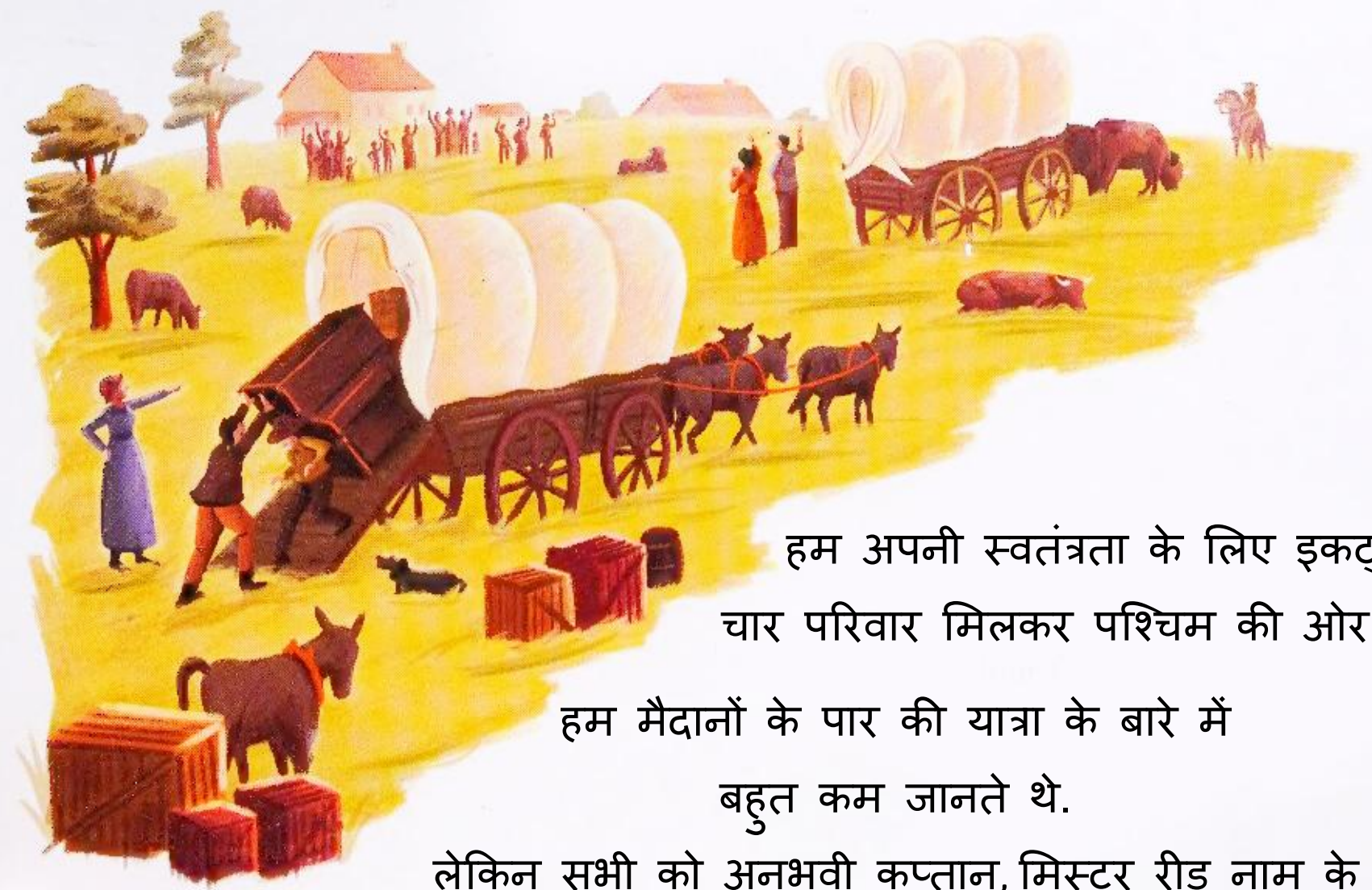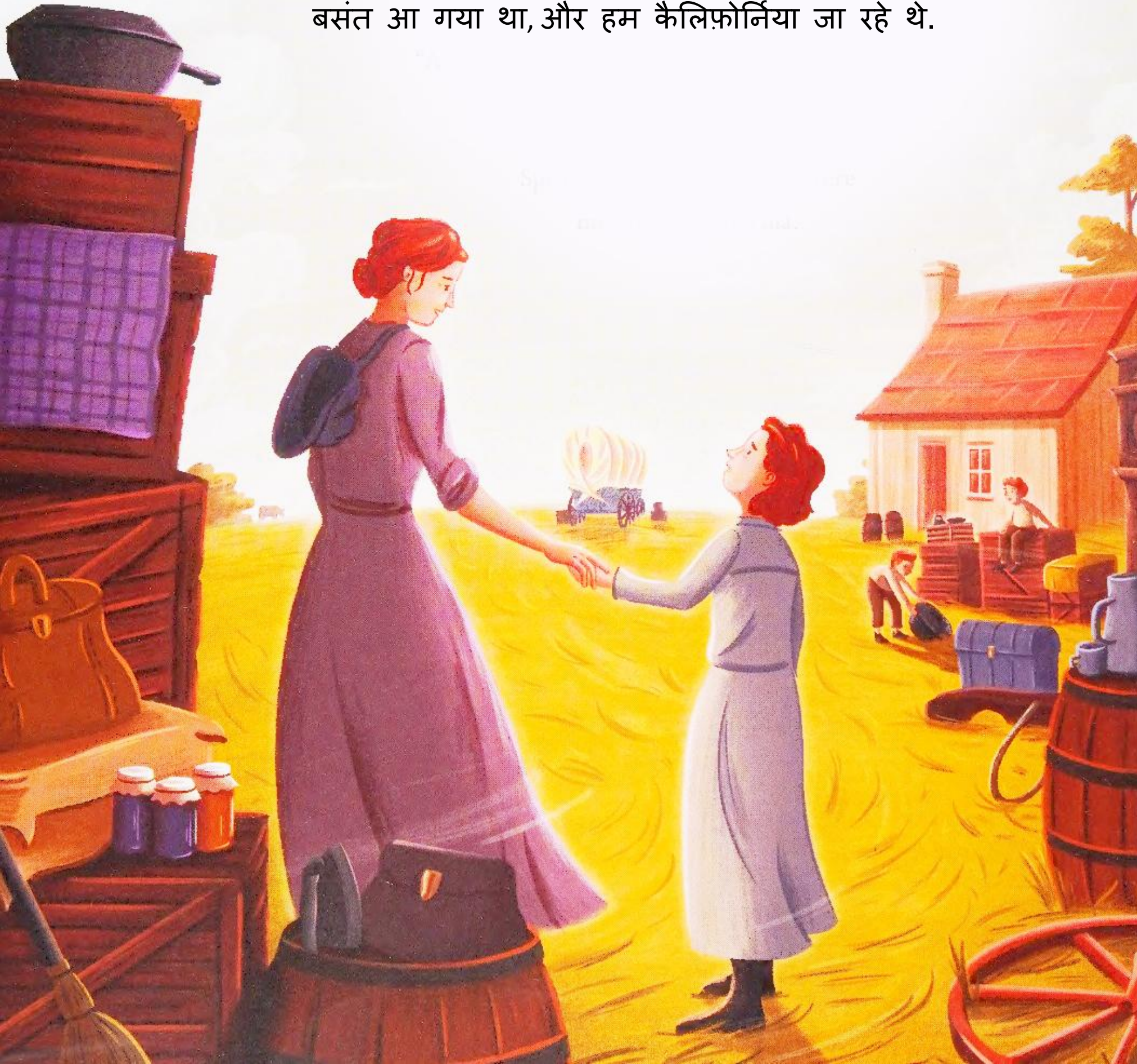
हम अपनी स्वतंत्रता के लिए इकट्ठा हुए.
चार परिवार मिलकर पश्चिम की ओर जा रहे थे.

हम मैदानों के पार की यात्रा के बारे में
बहुत कम जानते थे.
लेकिन सभी को अनुभवी कप्तान, मिस्टर रीड नाम के
एक कठोर बूढ़े पहाड़ी व्यक्ति पर
पक्का भरोसा था.

सामान बाँधकर, सवार होकर,
और गाड़ियों में जानवर जोतकर,
हमने अपने पुराने जीवन को अलविदा कहा.
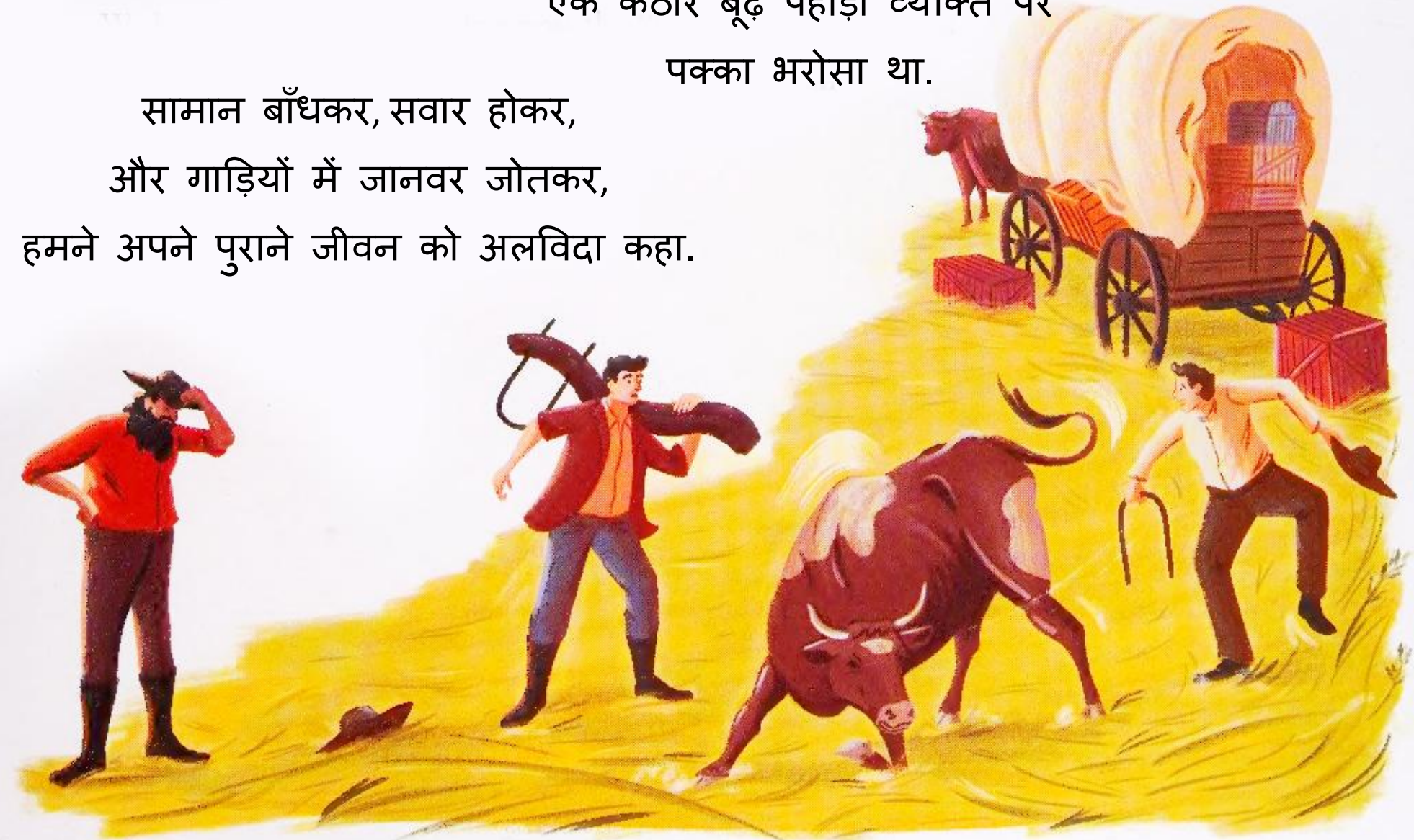
"पश्चिम की ओर!" मिस्टर रीड चिल्लाए, जिससे मैं बहुत डर गई!
शुरुआती दिनों में वो वाकई एक भयावह समय था,
और निस्संदेह हम सभी ने यही सोचा था. ..
कि हमारी यात्रा बहुत लंबी होने वाली थी.
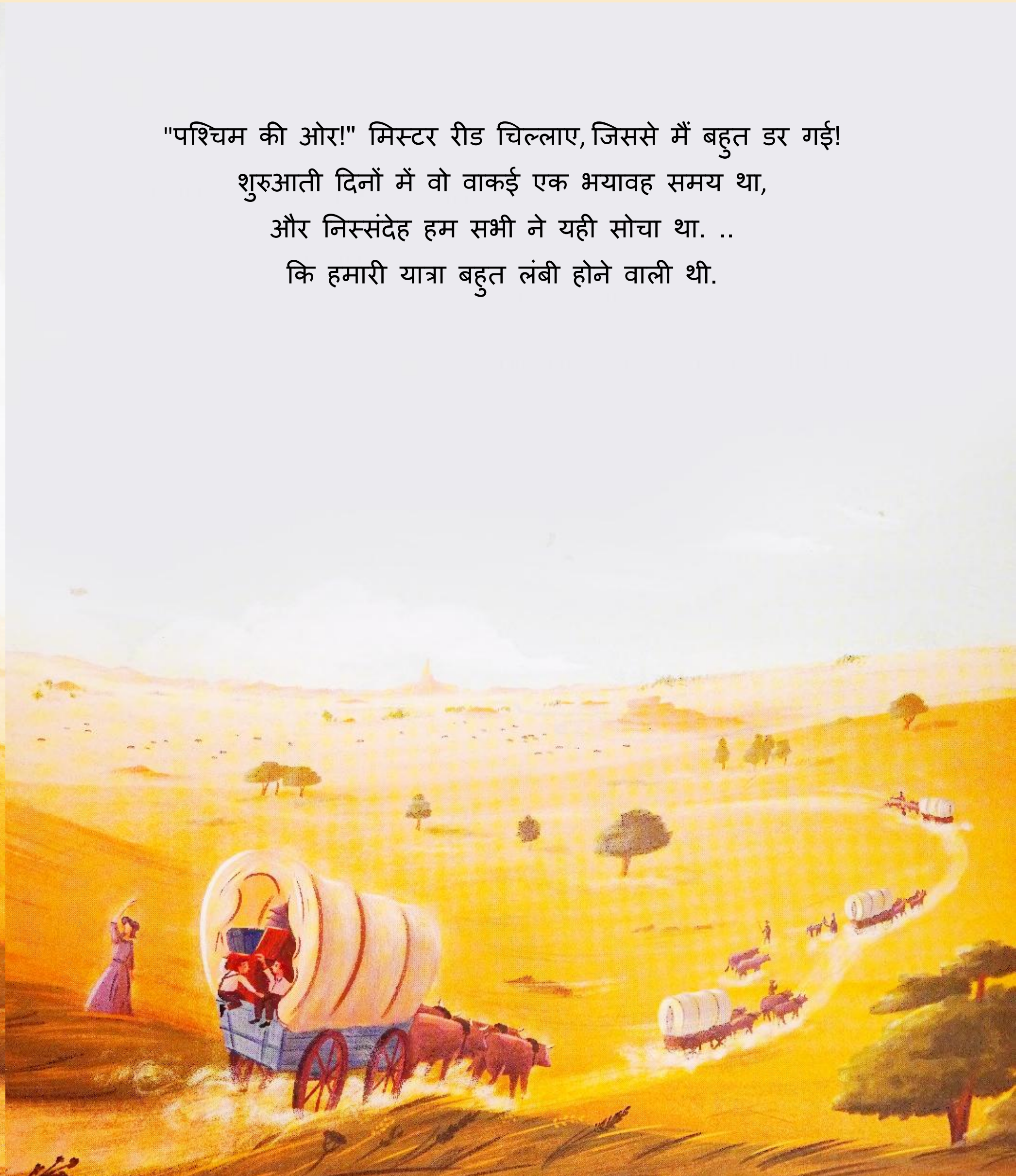
मेरे भाई जल्द ही
प्रेयरी के अभ्यस्त हो गए.

पर मैं नहीं.

मेरे काम नीरस और थकाऊ थे,
मैं हर कीमत पर विचित्र
मिस्टर रीड से दूर ही रहना चाहती थी.

"वह एक जंगली आदमी है!" मैंने माँ से कहा.
"जंगली इलाको में कोई जंगली आदमी ही मददगार होता है," माँ ने कहा
जब हम विशाल प्लैट नदी पार करने की तैयारी कर रहे थे.

माँ की बात कभी गलत नहीं होती थी.
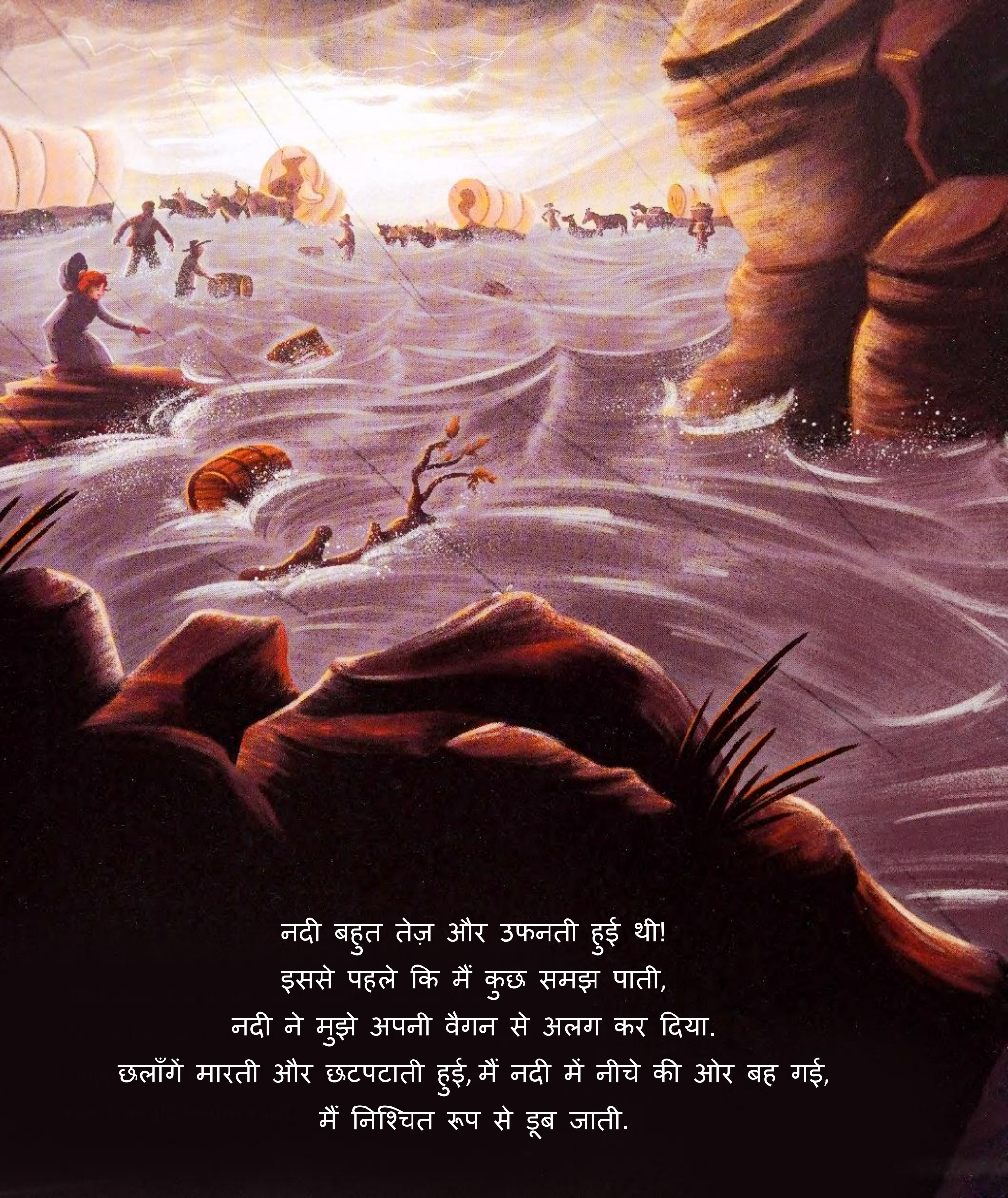
नदी बहुत तेज़ और उफनती हुई थी!
इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाती,
नदी ने मुझे अपनी वैगन से अलग कर दिया.
छलाँगें मारती और छटपटाती हुई, मैं नदी में नीचे की ओर बह गई,
मैं निश्चित रूप से डूब जाती.
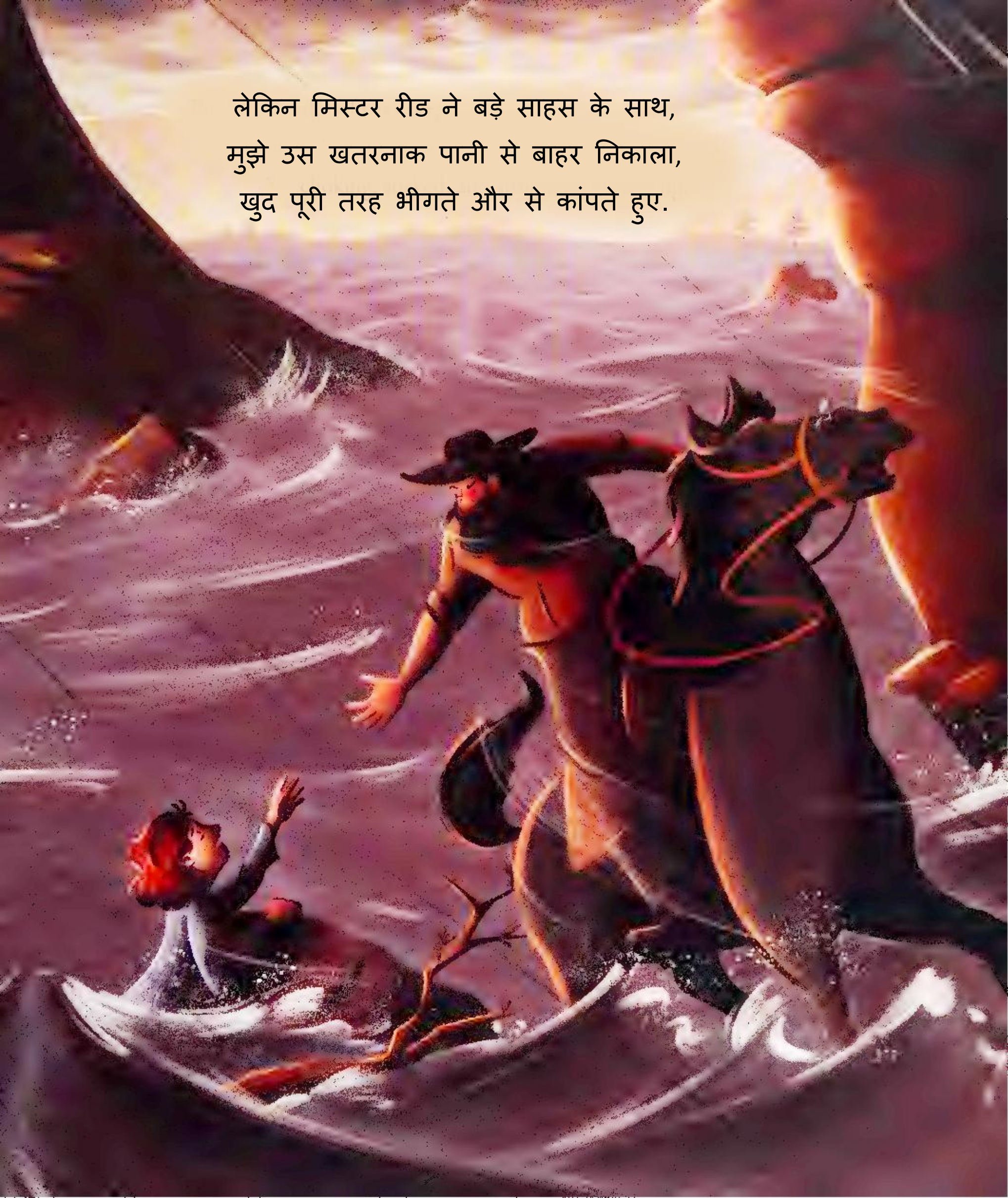
लेकिन मिस्टर रीड ने बड़े साहस के साथ,
मुझे उस खतरनाक पानी से बाहर निकाला,
खुद पूरी तरह भीगते और से कांपते हुए.

"भगवान मिस्टर रीड को लम्बी उम्र दे!" माँ ने कहा.
"अब तुम्हें उनसे माफ़ी मांगनी चाहिए."
ओह, मैं कितनी नासमझ थी!
"माँ... मैं कैसे सुधार कर सकती हूँ?" मैंने पूछा.
"यह बात तुम्हें मिस्टर रीड से पूछना चाहिए," उन्होंने जवाब दिया.

फिर मैंने मिस्टर रीड से कहा.
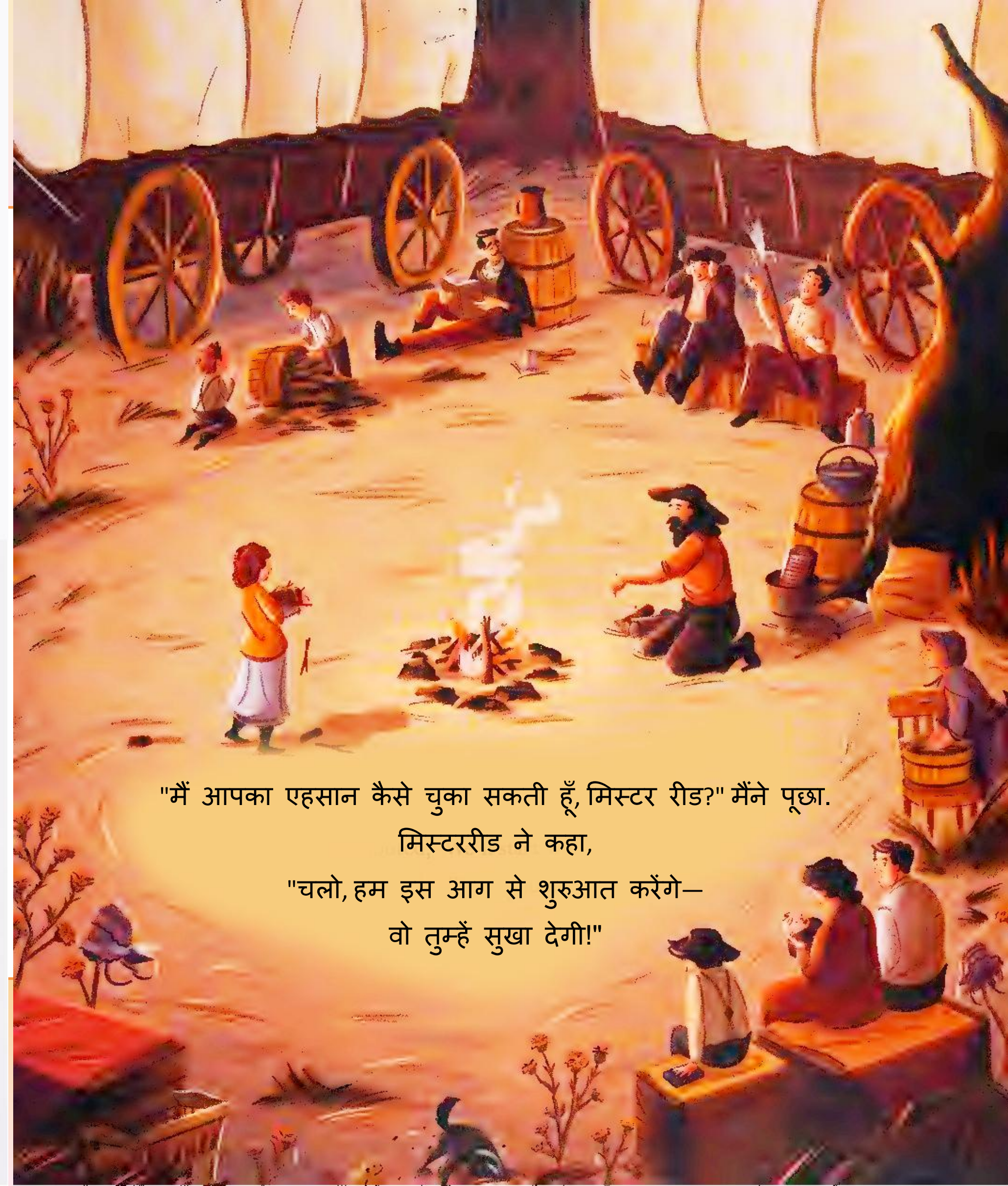
"मैं आपका एहसान कैसे चुका सकती हूँ, मिस्टर रीड?" मैंने पूछा.
मिस्टररीड ने कहा,
"चलो, हम इस आग से शुरुआत करेंगे—
वो तुम्हें सुखा देगी!"

आग के साथ भुनी हुई रोटी, बिस्कुट और स्टू भी आया.
हम सब साथ मिलकर एक परिवार जैसे हो गए थे,
और हम सबने मिलकर तारों के लिए गाया.

मिस्टर रीड को जंगल, अपने घर जैसा लग रहा था,
लेकिन मुझे अभी भी बहुत कुछ सीखना था.
हमारी पुरानी ज़िंदगी अब बहुत दूर छूट चुकी थी,
लेकिन कैलिफ़ोर्निया अभी भी पास नहीं था.
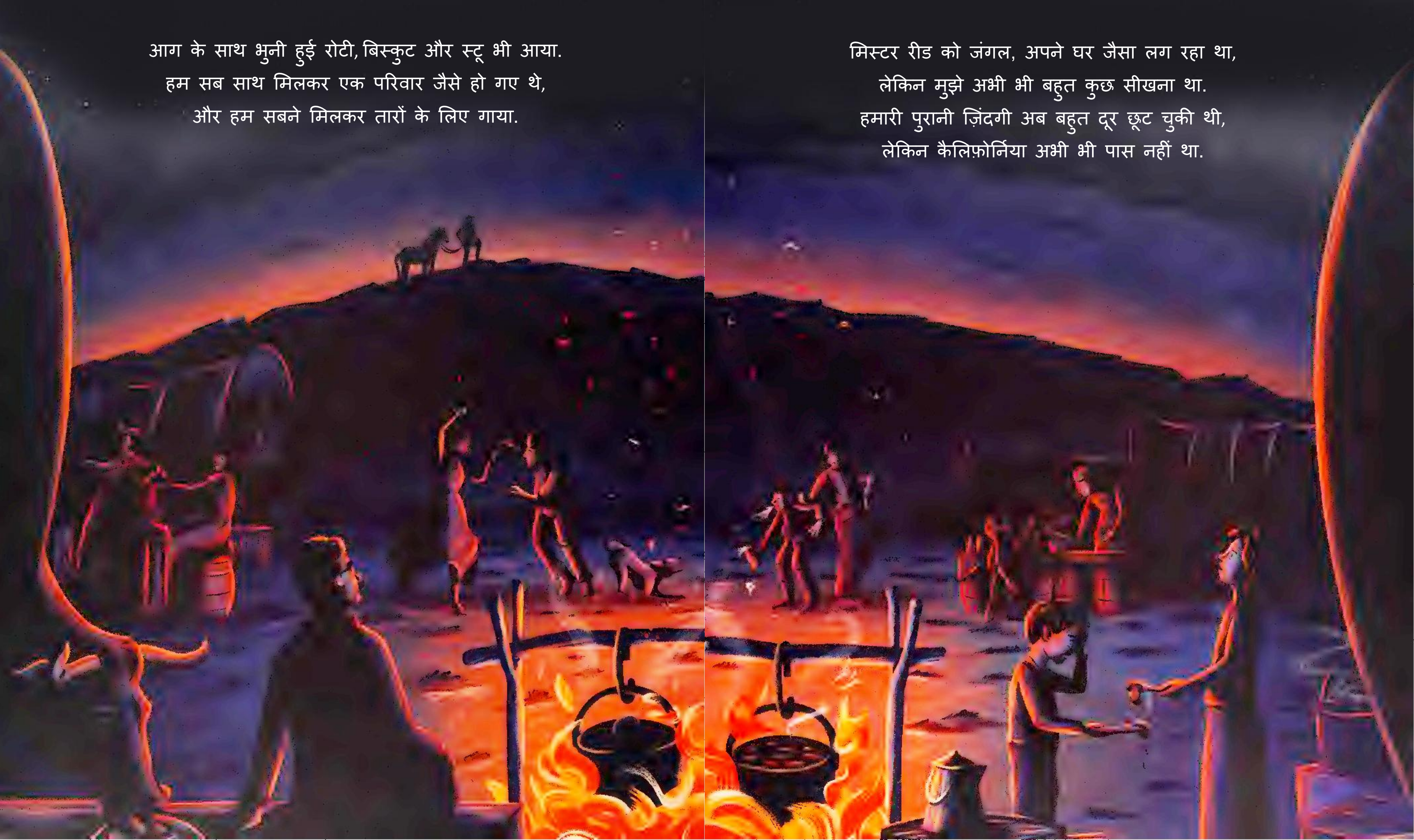
महीनों तक, हम उस धूल भरे प्रवासी रास्ते पर मेहनत करके बढ़ते रहे.
फिर अच्छे दिन बीत गए और मुश्किलें आईं.
हमारी गाड़ियाँ टूट गईं, बैल थक गए,
और बीमारियों ने हमें जकड़ लिया.

थके-मांदे और पैरों में दर्द के कारण, हम आराम करने के लिए रुके.
जो बोझ अब हम और नहीं ढो सकते थे, उसे हमने छोड़ दिया.
मैंने कुछ पल शांति के लिए एक छायादार जगह ढूँढी.
फिर एक विशाल पेड़ के नीचे मैं गहरी नींद में सो गई.
मैं वहां बहुत देर तक सोती रही.
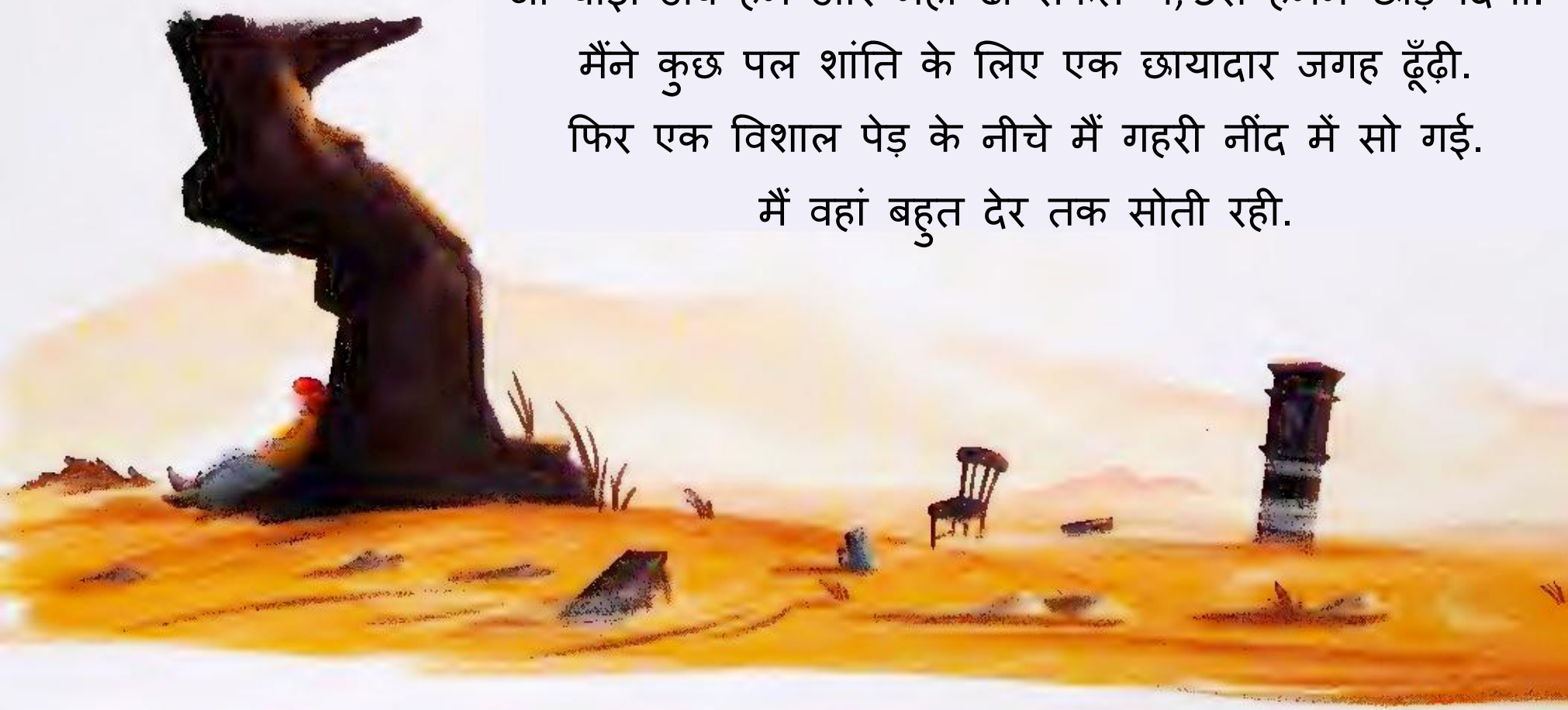
मुसीबत तब आई, जब मैं उठी...

तब मैं वहां बिल्कुल अकेली थी.

"माँ!" मैं पूरी ताकत से चिल्लाई,
लेकिन मुझे कोई जवाब नहीं मिला.
"मिस्टर रीड?" मैंने पुकारा,
लेकिन उससे भी
कोई फायदा नहीं हुआ.

गाड़ियों के निशान
पथरीली सड़क पर दिख रहे थे,
लेकिन मैं किस पथ का पीछा करूँ?
बिना कुछ समझे,
मैं पहाड़ियों की गहराई में
ठोकरें खाती चलती गई.

जैसे-जैसे रात हुई,
सर्दियों की बर्फीली उंगलियाँ
पेड़ों के बीच से फिसलने लगीं.
ठंड और अकेलेपन में,
मुझे मिस्टर रीड की याद आई.
इस हाल में वे निराश नहीं होते.
वह काम पर लग जाते,
डेरा डालते, और . . .

"चलो, हम आग से शुरुआत करेंगे!"
बस इतना ही.
फिर मैंने पत्ते, छाल
और शाखाएँ इकट्ठा कीं.
मुझे वो सब याद आया
जो मुझे क्या सिखाया गया था.
चकमक पत्थर को दूसरे पत्थर से
घिसकर मैंने खुद आग जलाई.
फिर चिंगारियाँ अंगारों में बदलीं,
अंगारे धधक उठे, और जल्द ही—

मेरी आग धू-धू करके जल उठी!
उस आग ने मेरा मनोबल
बहुत ऊँचा कर दिया.
मैंने गर्मी में खुदको
काफी सुरक्षित महसूस किया,
लेकिन आग की तेज़ चमक के साथ,
मैं अपने चारों ओर
तमाम जीव-जंतु भी देखे.
मेरे पैरों तले चूहे दौड़ रहे थे.
ऊपर उल्लू हूट कर रहे थे, और...
वह क्या था जो मेरी ओर रेंग रहा था?

एक भालू!

जंगली और लहीम-शहीम,
वह लड़खड़ाता हुआ अंधेरे से बाहर आया,
भयानक रूप से पागल.

लेकिन जंगली जगह में लोग जंगली ही होते हैं.
वे घिरे हुए और घबराए हुए होते हैं.
मैंने आग से एक जलती टहनी खींची,
"अभी नहीं, भालू," मैं ज़ोर से चिल्लाई.

"वाह!" धुएँ के बीच से प्रकट होते हुए मिस्टर रीड खाँसे.
"मैं कोई भालू नहीं हूँ."
उनके चेहरे को देखकर मुझे कितनी राहत मिली.

"मुझे नहीं पता था कि मैं तुम्हें खोज पाऊंगा," उन्होंने कहा.
"मुझे जंगल में मज़ा आ रहा था," मैंने जवाब दिया.
"तुम एक पायनियर हो," मिस्टर रीड हँसे.

भोर होते ही हम उठे
और गाड़ियों की ओर दौड़े.
अब ठंडे पहाड़
हमारे पीछे धीरे-धीरे धुंधले पड़ गए.
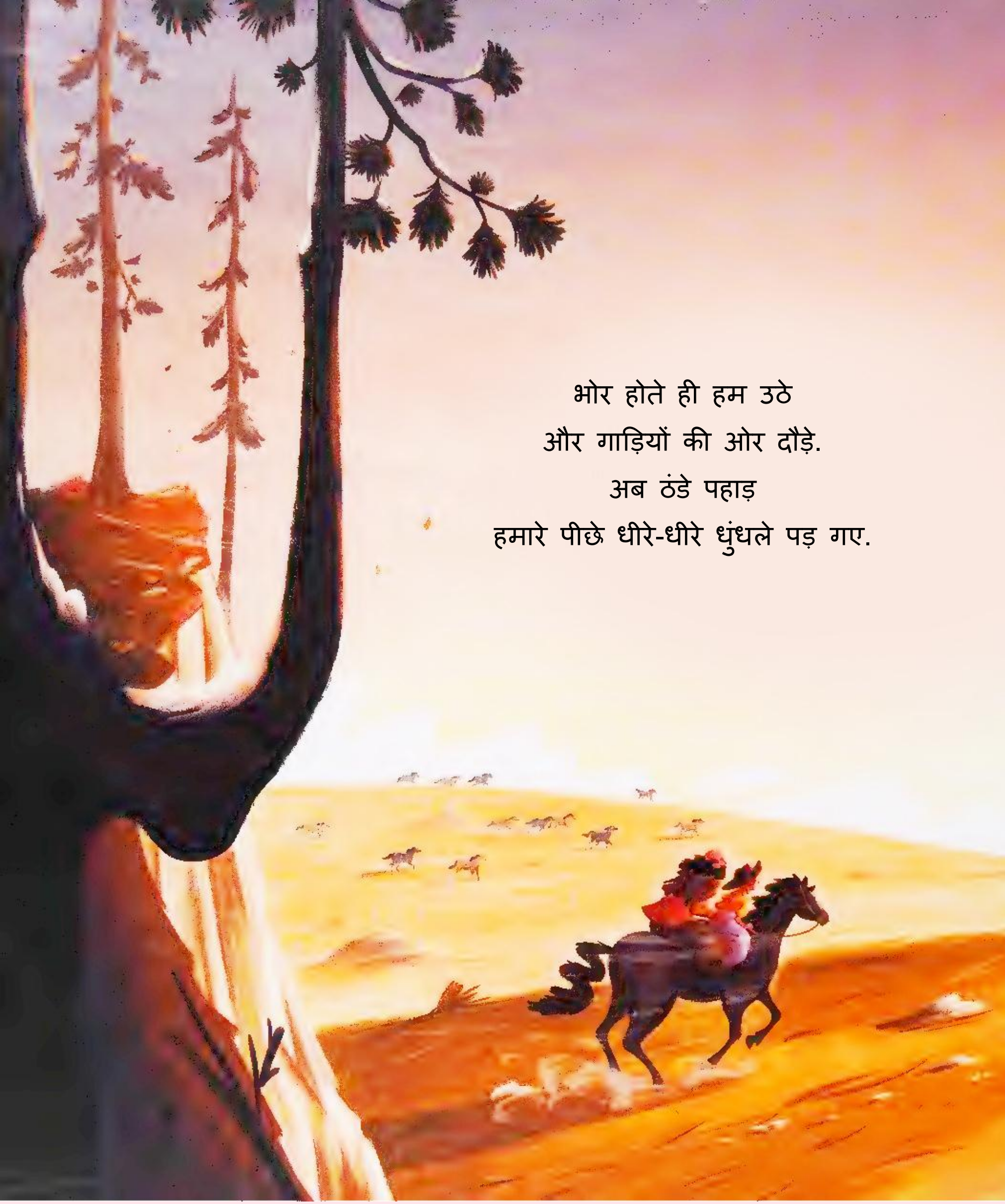
जब माँ ने देखा कि मैं सुरक्षित हूँ,
तो उनका डर और भय रफ़ूचक्कर हो गया.
मेरे भाइयों ने भी अपनी शरारतें छोड़कर मेरा स्वागत किया.

सच कहूँ तो, सभी बहुत खुश थे.
अब हम कैलिफ़ोर्निया पहुँच गए थे.

हमारे साथियों ने हमसे आखिरी बार अलविदा कहा,
और हमने रास्ते की ज़िंदगी से अलविदा कहा.
"पश्चिम की ओर!" मैंने चिल्लाई.

हमारी नई ज़िंदगी बस पहाड़ी के उस पार थी...

हमारे लिए - और मिस्टर रीड के लिए भी.

समाप्त